1
भूमिगत विष

बलिया। संखिया का कहर लोगों पर बरस रहा है और प्रशासन अनदेखी कर रहा है

भारतवासी जिस भूजल को पीते हैं, उसमें जहरीला संखिया आखिर किस हद तक फैल चुका है?

दिल्ली में एक डॉक्टर के फोन ने *डाऊन टु अर्थ* को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में जाने पर मजबूर किया। इस देश की राजधानी से 950 किलोमीटर की दूरी पर हमने गांव के गांव को संखिया से प्रभावित पाया – इस तरह देश में संखिया के दूषण का एक नया ही नक्शा ही बन गया है।

सरकार इस महामारी के बारे में किस हद तक चिंतित है?

दिल्ली में, भारतीय नागरिकों को सुरक्षित पानी की गारण्टी देने या इसकी गुणवत्ता की निगरानी करने वाले संस्थान स्थापित किए गए हैं, जो बड़ी बेशर्मी से इस समस्या से दूर भाग रहे हैं। 950 किलोमीटर की दूरी पर स्थित बलिया शहर के सरकारी अधिकारियों ने भी इसी तरह से बड़े रूखे अंदाज में इसकी उपेक्षा की है।

आगे की कहानी *डाउन टु अर्थ* के सितम्बर 15, 2004 के अंक में प्रकाशित हुई है।

दीनानाथ सिंह के बाएं पैर में कैंसर का जख्म है, जिसमें से निरंतर खून और मवाद निकलता रहता है। उनके पूरे शरीर में काले और सफेद धब्बे हैं। 61 वर्षीय सिंह त्वचा के कैंसर से भी पीड़ित हैं। उनके बाएं हाथ की दो उंगलियों में फोड़े हो गए थे; इसकी वजह से उंगलियों को काटना पड़ा। उनमें कई रोग हैं, परन्तु उन सभी का कारण एक ही है — संखिया, जिसे अंग्रेजी में आर्सेनिक कहा जाता है।

दीनानाथ उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के एकावाना राजपुर गांव में रहते हैं। वे जून 2004 में डाक्टरी सलाह के लिए दिल्ली स्थित ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़ (एम्स) में पहुंचे। एम्स में त्वचा विज्ञान के प्रोफेसर नीना खन्ना और उनके सहकर्मी अमित मल्होत्रा को दीनानाथ के दस्तावेज देखने के दौरान कुछ चौंका देने वाली बातें जानने को मिलीं। तारीख 12 मई, 2004 की खून की जांच रिपोर्ट से पता चला कि दीनानाथ के शरीर में 34.40 पार्टस पर बिलियन (पीपीबी) का संखिया है, जबकि अग्रणी विष-विज्ञान नियमावलियों में मात्र 1-4 पीपीबी सीमा का ही उल्लेख किया गया है।

फोटोग्राफर: नवनीत रंजन

''कृपया मुझे बताएं कि मेरा कुँआ दूषित है या नहीं। मेरे लिए यह जानना जरूरी है क्योंकि मेरा परिवार उस कुँए का पानी पीता है''

– दीनानाथ सिंह

''खून में संखिया की इतनी ज्यादा मात्रा तभी संभव है, जब इसका चिरकालिक प्रभाव पड़ा हो,'' ऐसा खन्ना महसूस करती हैं। वे इस कारण ज्यादा व्याकुल थीं क्योंकि दीनानाथ बलिया के रहने वाले हैं, जहां भूजल में संखिया के दूषण का कोई इतिहास नहीं था। चिंताग्रस्त होकर उन्होंने सीएसई की पत्रिका *डाऊन टु अर्थ* को फोन किया। वे जानना चाहती थीं कि उनके मरीज़ की विकराल बीमारी के पीछे कौन सा संभावित कारण हो सकता है। हमारी तरह उन्होंने भी पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश में संखिया के प्रकोप के बारे में सुन रखा था। ''परन्तु ये तो बलिया से हैं,''

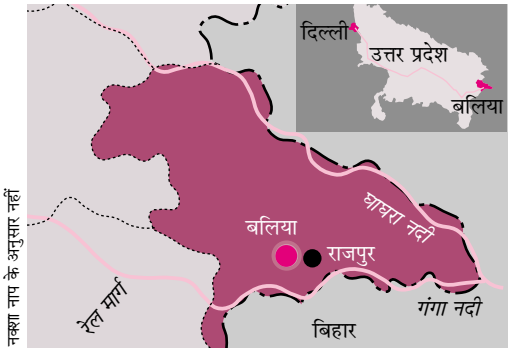

उन्होंने कहा। फिर इन्हें क्यों? यह संखिया कहां से आ रहा है?

हम भी चक्कर में पड़ गए। हमने सोचा कि हो सकता है इसका स्रोत औद्योगिक हो। *डाऊन टु अर्थ* ने फैसला किया कि डॉक्टर और उनके मरीज़ से इसकी दास्तां समझी जाए।

एम्स में जब *डाऊन टु अर्थ* ने दीनानाथ से उनकी बीमारी का कारण पूछा, तो उनका जवाब काफी चौंका देने वाला था। उनका मानना था कि वे अपने गांव में जिस हैंडपम्प से पानी निकालकर पीते हैं, वह संखिया से सराबोर है। ''जो आप कह रहे हैं, उसका आपके पास क्या सबूत है?'' हमने पूछा। ''बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी (बीएचयू) के डॉक्टरों ने मुझे बताया है कि हो सकता है पानी दूषित हो,'' उन्होंने जवाब दिया। हमने अपने सवाल जारी रखे: ''लेकिन क्या आपका कुआं दूषित है?'' ''नहीं। बल्कि, मैं जानता नहीं हूं।'' उनकी लाचारी साफ झलक रही थी। ''कृपया आप मुझे बताएं,'' उन्होंने *डाऊन टु अर्थ* से कहा, ''क्या मेरे कुएं में कोई समस्या है? मेरा पूरा परिवार यह पानी पीता है। मुझे पता होना चाहिए।''

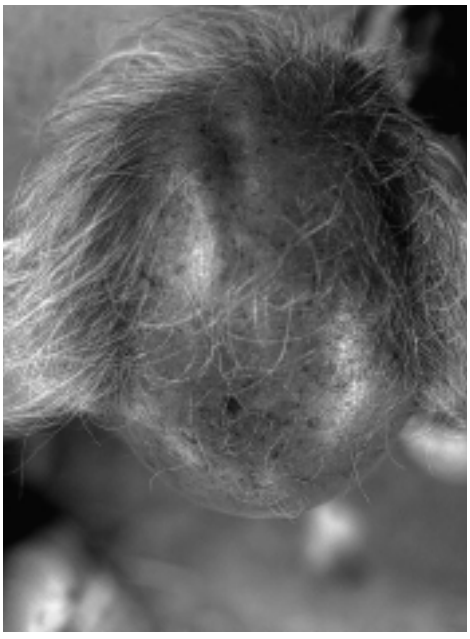

धीमे से आती मौत की चेतावनी: चौबे छपरा गाँव की जानकी देवी (ऊपर) तथा गंगापुर गाँव के शत्रुघन तिवारी (नीचे)

कुछ विचित्र तो था

किस प्रकार यह व्यक्ति, भारत का एक अदृश्य इलाके का निवासी, दिल्ली पहुंचा? दीनानाथ पिछले लगभग तीन दशकों (सन 1962) से भारतीय सेना में एक शिक्षण प्रशिक्षक रहे हैं। सन् 1991 में अवकाश प्राप्त कर लेने के उपरांत वे मध्य प्रदेश में बेतुल स्थित एक परोपकारी संगठन के साथ जुड़ गए। लेकिन जब सन् 1996 में उनके पैर में चोट लगी, तो वह कभी ठीक ही नहीं हुई। वे भोपाल स्थित जवाहरलाल नेहरू कैंसर हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर गए, जहां डाक्टरों ने उनसे एक बायाप्सी (जीवूति परीक्षा) करवाने के लिए कहा। परीक्षण से पता चला कि वे शल्की कोशिका कर्कटरोग (त्वचा के कैंसर) से पीड़ित हैं। कैसे? कोई नहीं जानता। अगर डॉक्टरों ने उनके खून की जांच की होती, तो वे पता लगा सकते कि उनके घाव संखिया विष से हुए हैं। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया।

सन् 2002 में दीनानाथ मध्य प्रदेश से अपने गांव चले गए, वो भी बिना जाने कि एक हैंडपम्प उनके भाग्य का विधाता बन जाएगा। उनकी स्थिति बिगड़ती गई। उनकी दो उंगलियों में फोड़े हो गए। जून 2003 में दीनानाथ ने बीएचयू हस्पताल जाना शुरू कर दिया, जो कि उनके गांव के सबसे नज़दीक का बड़ा मेडिकल सेंटर है। इस हस्पताल के डॉक्टर नहीं जानते थे कि दीनानाथ को कौन सी बीमारी खाए जा रही है। अत: उन्होंने उनकी बीमार उंगलियों को काट दिया।

लेकिन उन्हें कुछ विचित्र लगा और उन्होंने दीनानाथ को बीएचयू के त्वचा रोग विज्ञान विभाग में भेजा। यहां के एक डॉक्टर संजय सिंह ने उनकी त्वचा के फोड़े देखते ही दीनानाथ से संखिया के लिए खून की जांच करने को कहा। परन्तु वाराणसी में ऐसी कोई प्रयोगशाला नहीं है, जहां ऐसी कोई जांच होती हो। इनके खून का नमूना दिल्ली के एक निजी विकृति विज्ञान प्रयोगशाला में भेजा गया। इसकी रिपोर्ट, जो अप्रैल 2004 में दीनानाथ को प्राप्त हुई, से उनके खून में संखिया की पुष्टि हुई। दीनानाथ का मानना था कि उन्हें अपने उपचार के लिए रुपयों की जरूरत पड़ेगी और वे दिल्ली में अपने पूर्व नियोक्ता — भारतीय सेना — के पास आ गए। इस सैनिक को सामाजिक भविष्य निजी प्रमाण-पत्र की जरूरत थी; इससे सरकारी हस्पताल में उनका मुफ्त इलाज हो सकता है। दिल्ली में आकर उन्होंने एम्स में दुबारा जांच करवाया। यहां डॉक्टरों ने इनकी पिछली जांच की पुष्टि की। दीनानाथ त्वचा के कैंसर से पीड़ित थे।

लेकिन मामला अभी भी कुछ विचित्र था। दीनानाथ का इस देश के विभिन्न भू-भागों में तबादला हुआ था और हो सकता है कि उन्हें यह बीमारी कहीं और लगी हो। ''इसका क्या सबूत है कि उनमें संखिया का विष (आर्सेनिकोसिस) उनके कुंए के ही जरिए गया है?'' हमने पूछा।

दीनानाथ ने अपने 39 वर्षीय बेटे, अशोक सिंह से हमारा परिचय कराया। अशोक अपने गांव के बाहर कभी नहीं गया था, लेकिन इसकी त्वचा में भी फोड़े थे। किसी ने भी उसके खून की जांच नहीं की थी। *डाऊन टु अर्थ* ने उसके खून की जांच का भुगतान किया। नमूने उसी प्रयोगशाला में भेज दिए गए, जहां दीनानाथ के खून की जांच हुई थी। परिणाम चौंका देने वाले